



By-  
Er.Jabir Khan warsi

लेख विषय -

## "एकता मे बल है"



### संदर्भ-

वर्तमान परिदृश्य में एक दूसरे से घृणा ,ईर्ष्या ,लोभ इतना अधिक हो गया कि मनुष्य अपने अस्तित्व को ही भूल गया कि उसकी रचना किस आधार पर की गई।

सारे धर्म जो कि हमें मानवता का पाठ देने के लिए हैं, उन्हीं धर्म के ही नाम पर लोग विभाजित हो रहे हैं और एक दूसरे से घृणा कर रहे हैं ।  
और उसी धार्मिक विश्वास के नाम पर एक दूसरे के लिए नफरत की आग जला रहे हैं!

जबकि धर्म तो इसलिए है कि हम उसे अपनाकर एक अच्छे इंसान बन सकें और इसी तरह हम भाईचारे को बनाए रखते हुए एक-दूसरे की मान्यताओं को समझ सकें, क्योंकि सर्वशक्तिमान ईश्वर

(अल्लाह) ने हमारी रचना विभिन्न रंगों, भाषाओं और जनजातियों में की है, कि हम एक हो कर रहे और एक-दूसरे को जानें एक दूसरे की मान्यताओं को समझते हुए ईश्वर का परम् ज्ञान जो कि अध्यात्म है उसकी ओर अपनी रुचि बढ़ाएं , और इस तरह ईश्वर की रचनाओं में ध्यान लगाएं और उसकी विभिन्न रचनाओं को देख कर ये सोचें कि जब उसकी रचना इतनी अधिक सुंदर है तो जिस की ये सारी रचना वो कितना अधिक सुंदर होगा ।

इस ध्यान से हमें परम् ज्ञान(अध्यात्म)और ईश्वर (अल्लाह) से निकटता प्राप्त होगी और यही अध्यात्म (तसव्वुफ) की मूल धारा है जो हमें धर्म को अपना कर और उसकी वास्तविकता को समझ कर ही ग्रहण होगी। तभी हम सब एक होंगे और जब एक होंगे तो "एकता में बल " होगा ।

## सारांश -

जैसा कि कुरान सभी के लिए एक मार्गदर्शक है, जिसमें ईश्वर (अल्लाह) कहता है:

~("और उसकी निशानीयों (संकेतों) मे से आकाश और पृथ्वी का निर्माण है, और आपकी भाषाओं और आपके रंगों का अंतर है। वास्तव में ये ज्ञान के लोगों के लिए संकेत हैं।)"

(सूरह रोम, आयत -२२)

नोट: अब यह आयत हमारे लिए मार्गदर्शक है कि आकाश और पृथ्वी और सभी प्रकार की भाषाएं और रंग (सफेद, काले, नीले, पीले आदि) ये सब उस सर्वशक्तिमान ईश्वर (अल्लाह) के लक्षण व संकेत(निशानियाँ) हैं, और केवल ज्ञानी(अर्थात्, जिन्हें सर्वशक्तिमान अल्लाह अध्यात्म (तसव्वुफ) का ज्ञान देता है)।

इन संकेतों(यानि उसकी रचना की हर विभिन्नता जैसे भाषा, रंग, जनजाति( कबीले )आदि) में ज्ञानी सर्वशक्तिमान अल्लाह को तलाश करते हैं और तब उनको ज्ञान प्राप्ति होती है, अर्थात्, सर्वशक्तिमान अल्लाह ने हमें विभिन्न भाषाओं और रंगों में बनाया है तांकि हम एक दूसरे को समझ सकें और सर्वशक्तिमान अल्लाह के विभिन्न सुंदर रचनाओं को देख सकें। और

इसके फल स्वरूप हम उन सभी विभिन्नताओं में उस सर्वशक्तिमान ईश्वर (अल्लाह ) को स्मरण रखें कि अल्लाह कितना सुंदर है कि उसने हमें इतनी अधिक व सुंदर विभिन्नताओं में हमारी भी एक मनुष्य के रूप में रचना की।

यदि वह इच्छा करता, तो वह हमें एक ही भाषा, रंग, रूप व जनजाति में पैदा कर सकता था, लेकिन उसने हमें अलग-अलग रंगों, भाषाओं, राष्ट्रों और जनजातियों में विभाजित किया है, ताकि हम सर्वशक्तिमान ईश्वर (अल्लाह) के संकेतों व लक्षण(निशानीयों) को देख सकें और एक-दूसरे को जान सकें।

और हर रंग और जनजाती को सर्वशक्तिमान अल्लाह की निशानी के रूप में मानें और उसमें सर्वशक्तिमान ईश्वर (अल्लाह) का स्वरूप देखने की कोशिश करते रहें और

एक दूसरे की मान्यताओं व विश्वास का भी सम्मान करते रहें।

जैसा कि

कुरान में है कि एक दूसरे के विश्वासों का भी सम्मान करो ।

~ ("हे लोगो! हमने आपको एक पुरुष और एक महिला (आदम व हव्वा (अ.स)) से बनाया है), और आपको विभिन्न राष्ट्रों और जनजातियों में बनाया है तांकि आप एक दूसरे को जान सकें,  
निश्चित रूप से तुम में से अधिक सम्मानित वह है जो अधिक पवित्र है, निश्चित रूप से अल्लाह सर्वज्ञ है व सब-जागरूक है ")

~(सूरत अल-हुजरात, 49:13)

नोट:

सर्वशक्तिमान ईश्वर (अल्लाह) की दृष्टि में सम्मानित व्यक्ति वह है जो पवित्र है।

और पवित्र वह है कि जो अपने अस्तित्व को भी ईश्वर के सामने कुछ न समझे और स्वयं को ईश्वरीय स्वरूप में ऐसा सौंप दे और दुनियां की अपवित्रता जैसे लोभ , ईर्ष्या, स्वयं को सबसे उच्चतम समझना इन सब से परे होकर उसी एक ईश्वर में ध्यान लगाते हुए सबको एक देखे और एक दूसरे को अल्लाह की निशानी समझते हुए सबसे प्रेम करे, सभी को एक माँ और पिता (आदम व हव्वा (अ.स))

की संतान समझे, सभी रंग, भाषा ,रूप , जनजाति व जीव जंतु में उसी ईश्वर का ध्यान व स्मरण करे।

( "और अपने धार्मिक विश्वास को मानते हुए लोगों से प्रेम करे और उनके साथ अच्छा व्यवहार करे यही इसलामी महत्वपूर्ण उपदेश व उद्देश्य भी है")

जैसा कि हदीस का अर्थ है -

यज़ीद इब्न असद ने सुनाया: अल्लाह के रसूल व पैगंबर मोहम्मद (अल्लाह की दया व आशीर्वाद हो उनपर और उनके घरवालों पर)( मुझसे कहा कि,

("हे यज़ीद, तुम लोगो के साथ ऐसा प्रेम करो जैसे तुम दूसरों से अपने लिए पसंद करते हो।")

एक अन्य कथन में, पैगंबर मोहम्मद (अल्लाह की दया व आशीर्वाद हो उनपर और उनके घरवालों पर) ने कहा कि:

"लोगों से व्यवहार न करो लेकिन जिस तरह से आप उनसे अच्छे व्यवहार किए जाने की उम्मीद करते हैं")

~(मुस्नद अहमद बिन हमबल -16220)

नोट:

"इस हदीस में हमें सभी के साथ प्रेम से पेश आना सिखाया और बताया जा रहा है, इसमें कहीं भी यह नहीं कहा गया कि एक विशेष धर्म व किसी एक विशेष वर्ग के साथ प्रेम करो !

नही बल्की सबके साथ प्रेम करने व अच्छा व्यवहार रखने को कहा जा रहा है जो एक उच्च नैतिकता है !  
क्योंकि हम सभी एक के है और एक हैं"।

**परिणाम-**

“अर्थात् लोगों से उनके धर्म ,जन जाति, भाषा व रंग की परवाह किए बिना उनसे अच्छा व्यवहार व प्रेम करें,  
यह समझ कर कि ये सब उसी एक ईश्वर की रचना है  
और इसी ध्यान में रहे ”

जैसा कि हजरत मौला अली शेर ए खुदा (एलेहेस सलाम)  
फरमाते हैं,

"कि जिसने स्वयं को पहचाना उसने ईश्वर को पहचाना"



और हमारे सूफी बुजुर्गों ने इसी ध्यान में अपना पवित्र जीवन व्यतीत किया (की सब रचना उसी एक ईश्वर की रचना है) और इसी ध्यान को रखते हुए जब उन्हें परम ज्ञान की प्राप्ति हुई तो उन्होंने स्वयं को पहचाना और उसी ज्ञान की रोशनी से अंधकार को नष्ट किया और उसी ईश्वर के लिए सबसे आपसी प्रेम, सद्भाव और अनेकता में एकता को बल देते हुए हमारे समाज में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है और वे सभी लोगों को बहुत प्रेम देते हैं,

उन्होंने सभी को प्रेम के एक ही सूत्र में बांध दिया और उन्होंने संपूर्ण विश्व व भारत में इस्लाम की भावना को फैलाया (जो कि मानवता का पाठ है) और विभिन्न जनजातियों, भाषा व रंग के लोगों में एक दूसरे के प्रति प्रेम भर दिया, कि आज भी सभी धर्मों के लोग अधिक प्रेम सहित उनके पवित्र तीर्थस्थल के दर्शन मात्र हेतु बड़ी श्रद्धा से जाते हैं।

उन्हीं सूफी संतों में से एक महान सूफी जिन्हें उनके समय के महाऋषियों ने कहा-

'आलमबरदार-ए-इश्क',

और अधिकतर पंडितों ने उन को

'ईश्वर प्रेमी' बुलाया,  
 उनका पवित्र नाम सरकर अलमपनाह हज़रत हाजी  
 वारिस अली शाह (#देवा शरीफ़,)(अल्लाह उनकी पवित्र  
 आत्मा को और पवित्र करे) है-

उन्होंने कहा कि -

1-कोई हो चमार या झाड़ू लगाने वाला हो हमसे प्रेम  
 करता है हमारा है,

2- हमारे यहाँ पर, पारसी, ईसाई आदि सभी धर्म वाले  
 समान हैं, कोई बुरा नहीं,

3-हमारे यहाँ पर तो प्रेम ही प्रेम है।



नोट:

सरकार आलम पनाह हज़रत वारिस पाक वह सूफी  
 बुज़ुर्ग हैं जिन्होंने सभी धर्म के लोगों को अपनाया और  
 नफ़रत की आग को #मुहब्बत, से बुझाया और सभी को  
 #एकजुट करके #प्रेम के सूत्र में बाँध कर प्रेम संदेश दिया

"फरमाया # सुना सुना मुहब्बत करो"।

और #क़ुरान व सुन्नत, के अनुसार अलग-अलग  
 #धार्मिक, मान्यताओं से संबंधित लोगो को एक कर  
 दिया।

और लोगों को एकता का बल दिया, और यही हमारा आज का विषय है,

"एकता मे बल"

क्योंकि जब प्रेम, #सद्भाव, और एकता होगी, तो हमारा समाज #बलशाली, होगा।

मगर अंत में बहुत ही विवश होकर हमें यह कहना पड़ रहा है कि हमने आज उन्हीं महापुरुषों के मार्गदर्शन को छोड़ दिया है ,अगर आज हम उन्हीं महापुरुषों के मार्गदर्शन को अपना लें तो फिर से सब में प्रेम होगा और उसी प्रेम से अनेकता में एकता होगी और जब एकता होगी तो उसी एकता में बल होगा क्योंकि एकता उसी एक ईश्वर से संबंधित है।



"यदि हम ईश्वर से प्रेम करेंगे, तो सभ्य होंगे, तो एक होंगे, तब हम बलशाली होंगे।"



खाकरूब(सफाई कर्मचारी) आस्ताना आलिया  
(तीर्थस्थल), सरकार आलम पनाह हज़रत  
#वारिस-ए-पाक,  
(देवा शरीफ)

~इंजीनियर जाबिर खान वारसी(लखनऊ)  
~द्वारा लिखित

#एकता, #प्रेम, #वारिसपाक, #सूफी